JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों के अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं रूचियों पर प्रभाव का अध्ययन

सुधांशु शर्मा, शोधछात्र, लॉर्ड्स विष्वविद्यालय, चिकानी, अलवर।
डॉ. सविता गुप्ता, प्रोफेसर, लॉर्ड्स विष्वविद्यालय, चिकानी, अलवर।

प्रस्तावना

"जिस प्रकार पौधों के लिए कृषि आवश्यक है उसी प्रकार व्यक्ति के विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है।"

व्यक्ति के जीवन में शिक्षा का अतुलनीय योगदान होता है क्योंकि व्यक्ति जीवन में जो कुछ भी सीखता है उसमे स्वयं का जीवन तो संचालित करता ही है वरन् वो न्यूनाधिक रूप से अन्य के जीवन को भी प्रभावित करता है। व्यक्ति की शिक्षा का प्रभाव उसके परिवार समाज में भी परिलक्षित होता है भारतीय समाज में वैदिक काल से ही शिक्षा को लेकर एक अलग तरह का प्ररिप्रेक्ष्य रहा है। भारतीय समाज में प्राचीनकाल से शारीरिक शिक्षा के साथ आध्यात्मिक विकासोन्मुख शिक्षा पर जोर दिया गया है।

आज वर्तमान में शिक्षा, शिक्षापद्धति, शिक्षक–शिक्षार्थी में तो परिवर्तन आया ही है अपितु अभिभावको का दृष्टिकोण भी परिवर्तित हुआ है। अभिभावकों का व्यवहार, शैक्षिक स्तर, परिवेश शिक्षार्थी के अधिगम, सृजनात्मकता बुद्धि के साथ संवेगों, रूचियों एवं शैक्षिक उपलब्धियों को निश्चित तौर पर प्रभावित करता है।

शिक्षा जीवन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू हैं इससे न केवल हम सीखते है बल्कि एक जिम्मेदार, समझदार और मेहनती नागरिक बनते हैं। शिक्षा के माध्यम से ही ज्ञान, कौशल, विवेक जागृत होता है और परिस्थितियों के अनुकूल निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है हर व्यक्ति के जीवने में शिक्षा की एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा ने हमेशा से ही एक व्यक्ति में बेहतर व्यक्तित्व का निर्माण किया है शिक्षा का उद्देश्य केवल परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करना ही नही होता है बल्कि शिक्षा के माध्यम से नई चीजों को सीखने के साथ–साथ उसके ज्ञान में भी वृद्धि भी की जा सकती है।

समस्या का औचित्य :

किसी व्यक्ति की उत्कृष्ट शिक्षा में जितना योगदान समाज विद्यालय राष्ट्र का होता है उतना ही, या उसमें भी अधिक योगदान उसके परिवार अर्थात अभिभावको का होता है। मानव विकास को जानने के लिए शिक्षाविदों एवं मनोवैज्ञानिकों ने अनेक प्रयोग व अध्ययन किए और अध्ययन में पाया कि बालक के विकास पर वंशानुक्रम एवं वातावरण का प्रभाव पड़ता है। कैण्डोल ने Ýांस के 552 विद्वानों के परिवारों का अध्ययन किया और पाया कि सभी विद्वानों के परिवारों के सदस्य शिक्षित एवं योग्य थे। टरमैन तथा मैरिल ने अपने अध्ययन के आधार पर यह स्पष्ट किया कि बच्चों की बुद्धिलब्धि पर उसके माता पिता की शैक्षिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का प्रभाव पड़ता है। इस आधार पर कह सकते हैं कि बालक की शैक्षिक उपलब्धि, शैक्षिक रूचि, मूल्यों पर अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक है।

उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के बालक पर शैक्षिक वातावरण की उपलब्धता के कारण उसकी रूचियों एवं शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव पडता है किन्तु निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावक का बालक शैक्षिक वातावरण की अनुपस्थिति के कारण उस पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

वर्तमान समय में बालकों में शैक्षिक उपलब्धि तो बढ़ रही है किन्तु बालक में अपनी शिक्षा को लेकर असंतोष एवं असमंजस व्याप्त है। जिसके परिणाम स्वरूप शैक्षिक पतन एवं बैरोजगारी में वृद्धि हो रही है। इसमें अभिभावकों के शैक्षिक स्तर की भूमिका महत्वपूर्ण है। अतः जिन विद्यार्थियों के अभिभावकों का शैक्षिक स्तर उच्च है उन विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व शैक्षिक रूचि पर विशेष प्रभाव पड़ता है या नहीं ? क्योकि परिवार का प्रभाव प्रत्येक पहलू पर पड़ता है। उच्च शैक्षिक स्तर एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावक का विद्यार्थी जब परिवार से निकलकर विद्यालय जाता है तो उसके समक्ष शैक्षिक रूचियों एवं शैक्षिक उपलब्धि को लेकर समस्यायें आती है। आगे चलकर ये समस्याएं शैक्षिक बैरोजगाारी का कारण बनती है। अभिभावको के दबाव में बालक को अपनी रूचियों एवं इच्छाओं को कुण्ठित करना पड़ता है।

वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए शोधकर्त्ता के मन में कुछ प्रश्न है जो समाज से भी अछुते नहीं है। क्योंकि विद्यालय के बाद बालक अधिकतर समय अभिभावकों के साथ ही व्यतित करता है अभिभावक बच्चों को समय दे पाते है या नही ? उनके बच्चों के साथ कैसे संबंध है? अभिभावक का शिक्षा का स्तर कैसा है? क्या अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है ? क्या बालकों की शैक्षिक उपलब्धि और शैक्षिक रूचि में सम्बन्ध हें? क्या अभिभावकों का शैक्षिक स्तर बालकों की रूचि को प्रभावित करता है? इन अनुत्तरित प्रश्नों के समाधान के लिए सम्बन्धित शोध समस्या का चयन किया है।

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि में अभिभावकों के शैक्षिक स्तर के प्रभाव को जानने के लिए शोधार्थी नें इस समस्या का चयन किया। इस क्षेत्र की समस्या में शोधकर्ता को ज्वलन्त बिन्दु दिखाई दिया कि उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 12 के विद्यार्थियों पर अभिभावकों के उच्च शैक्षिक स्तर व निम्न शैक्षिक स्तर का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

समस्या कथन

"उच्च माध्यमिक स्तर के बालकों के अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का उनके बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं रूचियों पर प्रभाव का अध्ययन"

शोध अध्ययन के उद्देश्य :–

1. उच्च एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
2. उच्च एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि का अध्ययन करना।
3. उच्च एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि के सह सम्बन्ध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पना

1. उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि के मध्यमानों में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक सह सम्बन्ध नहीं होता है।

पारिभाषिक शब्दावली

प्रस्तुत अनुसंधान में प्रयुक्त तकनीकी शब्दावली का अर्थापन निम्नानुसार है–

अभिभावकों का शैक्षिक स्तर :– प्रस्तुत अनुसंधान में अभिभावकों के शैक्षिक स्तर को दो स्तरों में विभाजित किया है

अभिभावकों की शिक्षा	शैक्षिक स्तर
1. कक्षा 12 के बाद कोई डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर या अन्य उच्च शिक्षा प्राप्त	**उच्च शैक्षिक स्तर**
2. कक्षा 12 या उससे निम्न शिक्षा प्राप्त	**निम्न शैक्षिक स्तर**

शैक्षिक उपलब्धि :–

शोधकर्ता ने प्रस्तुत शोध कार्य में कक्षा 10 के प्राप्तांक–प्रतिषतांकों को शैक्षिक उपलब्धि हेतु स्वीकार किया है।

रूचियाँ :–

प्रस्तुत शोध में अध्ययन आदतों से तात्पर्य विद्यार्थियों द्वारा अध्ययन हेतु की जाने वाली विभिन्न क्रियाओं में प्रयुक्त व्यवहार से है। शोध कार्य में विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचियों को ही लिया गया है।

अध्ययन परिसीमन

प्रस्तुत अध्ययन में सीकर जिले के सरकारी एवं गैर सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालयों को शामिल किया गया है। अनुसंधान में सीकर जिले के उच्च शैक्षिक स्तर रखने वाले 300 अभिभावकों के विद्यार्थियों एवं निम्न शैक्षिक स्तर रखने वाले 300 अभिभावकों के विद्यार्थियों के कक्षा 12 में अध्ययनरत् 600 छात्र–छात्राओं को सम्मिलित किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन को बालकों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचियों के अध्ययन तक सीमित रखा गया है।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध में असंभाव्य न्यादर्श की सौद्देश्यपूर्ण न्यादर्श विधि के द्वारा न्यादर्श का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में सीकर जिले के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययरत कक्षा 12 के 600 विद्यार्थियों को लिया गया

उच्च एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के उच्च माध्यमिक स्तर के कक्षा 12 के विद्यार्थी 600							
उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थी 300				निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थी 300			
सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी 150		गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थी 150		सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी 150		गैरसरकारी विद्यालय के विद्यार्थी 150	
छात्र 75	छात्रा 75	छात्र 75	छात्रा 75	छात्र 75	छात्रा 5075	छात्र 75	छात्रा 75

शोध विधिः

शोधार्थी द्वारा अपनी समस्या की प्रकृति एवं उद्देश्यों को दृष्टिगत रखते हुए सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है जिसके अन्तर्गत प्राथमिक आंकड़ों का संग्रहण चयनित न्यादर्श से उपकरणों के माध्यम से किया गया है।

शोध में प्रयुक्त उपकरण

1. अभिभावकों का शैक्षिक स्तरः– प्रस्तुत शोध कार्य में अभिभावकों के शैक्षिक स्तर का निर्धारण करने के लिए उनकी प्राप्त (अर्जित) षिक्षा को आधार माना है। अनुसंधान में अभिभावकों के शैक्षिक स्तर को दो स्तरों में विभाजित किया है।

(i). उच्च शैक्षिक स्तर एवं

(ii). निम्न शैक्षिक स्तर।

2. शैक्षिक उपलब्धि :– विद्यार्थियों के कक्षा 10 के परीक्षा परिणाम के प्रतिशत के आधार पर "उपलब्धि परीक्षण।"

3. शैक्षिक रूचि :– प्रस्तुत शोध के लिए बालकों की शैक्षिक रूचियों को जानने के लिए **एस. पी. कुलश्रेष्ठ** द्वारा निर्मित '**शैक्षिक रूचि प्रपत्र**' का चयन किया गया है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोधकर्ता ने अपने शोध अध्ययन में प्राकल्पनाओं को दृष्टिगत रखते हुए प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रतिधियों का प्रयोग किया है।

1-मध्यमान

2-प्रमाणिक विचलन

3-टी –परीक्षण

4-सहसम्बन्ध

दत्त विश्लेषण

सारणी 1

उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	**संख्या (N)**	मध्यमान **(MEAN)**	मानक विचलन **(S.D.)**	मध्यमान का अंतर	टी–मान **(T-Value)**	सार्थकता के 0.05 स्तर पर
उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थी	300	68.32	10.59	6.28	2.39	अस्वीकृत
निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थी	300	62.04	8.32			

(डी.एफ598 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96 एवं 0.01 स्तर पर 2.58)

उपरोक्त सारणी संख्या 1 के अध्ययन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अंतर है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी 2

उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की **शैक्षिक रूचि** का तुलनात्मक अध्ययन

समूह	**संख्या (N)**	मध्यमान **(MEAN)**	मानक विचलन **(S.D.)**	मध्यमान का अंतर	टी–मान **(T- Value)**	सार्थकता के 0-05 स्तर पर
उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थी	300	37.10	6.00	3.74	5.95	अस्वीकृत
निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थी	300	33.36	6.68			

(डी.एफ 798 पर टी का सारणी मान .05 स्तर पर 1.96 एवं 0.01 स्तर पर 2.58)

उपरोक्त सारणी संख्या 2 के अध्ययन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि स्तर में सार्थक अंतर है। अतः निर्धारित शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

सारणी 3

उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि में सह–सम्बन्ध माप

क्र. सं.	मापित चर	विद्यार्थियों की संख्या	सह–सम्बन्ध गुणांक ;तद्ध	**निष्कर्ष** **-05** स्तर पर
1	शैक्षिक रूचि	600	-0.04	स्वीकृत सार्थक सह–सम्बन्ध नहीं है
2	शैक्षिक उपलब्धि	600		

स्वतन्त्रता के अंश ;कद्धि = 598, .05 = 0.140

उपरोक्त सारणी संख्या **3** के अध्ययन के आधार पर निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के

विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबध नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

शोध में उद्देष्यों के अनुसार विष्लेषण करने पर प्राप्त निष्कर्ष :–

1. उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अंतर पाया गया।उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धिनिम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि से उच्च पायी गयी। निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों की तुलना में उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों का अपने बालकों का समुचित मार्गदर्शन एवं सहयोग के फलस्वरूप उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक रही।

2. उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि में सार्थक अंतर पाया गया।उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों कीशैक्षिक रूचि निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि से उच्च पायी गयी। निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों की तुलना में उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों का अपने बालकों का समुचित शिक्षण विषय व क्षेत्र का मार्गदर्शन, शिक्षण क्षेत्र के प्रति व्याप्त भ्रान्तियों का निदान एवं बालकों की रूचियों के सम्मान के फलस्वरूप उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों कीशैक्षिक रूचि अधिक रही।

3. उच्च शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की एवं निम्न शैक्षिक स्तर के अभिभावकों के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सार्थक सहसंबध नहीं पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध से जो निष्कर्ष सामने आये हैं वे विद्यार्थियों की कई प्रकार की शैक्षिक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध के शैक्षिक निहितार्थों को निम्नलिखित प्रकार से स्पष्ट किया गया है–

प्रस्तुत शोधकार्य के निष्कर्षों से अभिभावक अपने मार्गदर्शन के महत्व को समझ सकते है और अपने बालकों में प्रारम्भिक अवस्था से ही विभिन्न विषयों के प्रति रूचि, चिन्तन, मनन, तर्क एवं समस्या समाधान की ऐसी क्षमता विकसित कर सकते हैं जिससे बालकअपने भावी जीवन के लिए स्व विवेक के आधार विषयों का चयन कर अपना भविष्य उज्ज्वल कर सके।

शिक्षकों की दृष्टि से भी अत्यन्त उपयोगी है। प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों से शिक्षकों को भी प्रेरणा लेनी चाहिए कि वे अपने बालकों की रूचि को नहीं दबायें। बालकों की रूचि के अनुसार

उन्हे शैक्षिक विषय चयन का अवसर प्रदान करे। पाठ्यक्रम छात्रों की रुचि एवं क्षमता के अनुकूल ही बनाये जायें। वर्तमान शिक्षा को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाये कि वह छात्रों को अधिक से अधिक बौद्धिक व रचनात्मक कार्य के अवसर प्रदान करें।बालकों पर अपनी रूचि नहीं थोपें। बालकों की विषयों के प्रति रूचि जानकर उसकी उपयोगिता एवं भावी जीवन में उसके उपयोग को बालक के सामने स्पष्ट करें ताकि विद्यार्थी समुचित विकास कर सके।

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष विद्यार्थियों के लिए भी अत्यधिक महत्वपूर्ण है। यह सर्व विदित है कि विभिन्न व्यवसायों, विषयों, क्रियाओं, तथ्यों, वस्तुओं आदि के प्रति व्यक्ति की विभिन्न रुचियाँ होती है। यदि व्यक्ति को उसकी रुचियों के अनुकूल कार्य प्रदान किया जाता है तो वह उसे कुशलतापूर्वक करता है और कार्य के प्रति हमेशा सचेत एवं संलग्न रहता है। इसी प्रकार यदि विद्यार्थी अपनी रुचियों के अनुकूल शैक्षिक विषय का चयन करते हैं तो वह अपने अध्ययन विषय के प्रति अधिक से संलग्न रहते हैं अर्थात् रुचियों के कम या ज्यादा होने पर छात्र एवं छात्राओं की अध्ययन संलग्नता प्रभावित होती है। अतः यह आवश्यक है कि 21वीं सदी के इस वैज्ञानिक युग में विद्यार्थी अपनी रुचियों के अनुकूल शैक्षिक विषयों का चयन करे जिससे वे उच्च शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त कर सके। वे अपने भावी जीवन के लिए आजीविका का मार्ग प्रसस्त कर सके।

संदर्भ (References)

1. अरोडा, रीता एवं मारवाह, सुदेश, (2007). शिक्षा मनोविज्ञान एवं सांख्यिकी, चौड़ा रास्ता, जयपुर, शिक्षा प्रकाशन।
2. अस्थाना, रामनारायण व अस्थाना (1990). मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर।
3. कपिल, एच.के. (2015) अनुसंधान विधियाँ, एच.पी.भार्गव बुक हाऊस, आगरा।
4. ढौड़ियाल, सच्चिदानन्द व पाठक, अरविन्द : शैक्षिक अनुसंधान का विधिशास्त्र, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
5. दुबे, प्रो. एल. एन. एवं बरोदे, प्रो. बी. आर. (2009) : षिक्षा मनोविज्ञान, आरोही प्रकाषन, साउथ सिविल लाइन्स, जबलपुर, प्रथम संस्करण।
6. पाठक, पी.डी, : (2007) "शिक्षा मनोविज्ञान", विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
7. पाण्डेय, के.पी., : (2006) "शैक्षिक अनुसंधान", विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।
8. भटनागर, सुरेष (2009). षिक्षा मनोविज्ञान : लायल बुक डिपो. मेरठ।
9. शर्मा, आर.ए. (2009) शिक्षा अनुसंधान, आर.लाल.बुक डिपो, मेरठ।
10. शर्मा वीरेन्द्र प्रकाश, (2004) रिसर्च मेथडॉलॉजी, प्रचशील प्रकाशन, जयपुर।
11. श्रीवास्तव डी.एन. एवं वर्मा प्रीति (2014) बाल मनोविज्ञानः बाल विकास, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।